 MTT–041

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम.टी.टी.–041 : सिंधी-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे अधिकतम अंक : 100

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250-300** शब्दों में दीजिए : 2×15=30

   (i) सिंधी-हिंदी शब्दरचना सम्बन्धी समानताओं का उल्लेख कीजिए।

   (ii) सिंधी-हिंदी की सामाजिक-सांस्कृतिक समानताओं पर निबंध लिखिए।

(iii) लिपि एवं वर्तनी के आधार पर सिंधी–हिंदी भाषा की तुलना कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्यप्रयोग कीजिए : 5×2=10

(i) अकाबरू

(ii) साजो

(iii) पारुथो

(iv) गरणु

(v) घंडणु

(vi) ओचितो

(vii) बुडणु

(viii) हचारो

(ix) जदीद

(x) सुञाणणु

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में वाक्यप्रयोग कीजिए : 5×2=10

(i) पीटना

(ii) किधर

(iii) पढ़ा-लिखा

(iv) इक्यासी

(v) प्रदर्शनी

(vi) कभी-कभी

(vii) पश्चिम

(viii) पहाड़

(ix) चाँदनी

(x) शनिवार

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** कहावतों/मुहावरों का सिंधी से हिंदी/हिंदी से सिंधी में अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 5×2=10

(i) पेशि पवणु

(ii) दिल ते पथरु रखणु

(iii) सवड़ि खां ब॒ाहिरि पेर डिघेरणु

(iv) पछाड़ी किनी करणु

(v) आसमानु टुटणु

(vi) उल्टे छुरे से सर मूँडना

(vii) गरदन झुकाना

(viii) छठी का दूध याद आना

(ix) टंगड़ी अड़ाना

(x) डुगडुग्गी पीटना

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 5×1=5

(i) महिरबानी करे मुंहिंजो फोनु नंबर लिखी वठो।

(ii) तव्हां घुमण लाइ राम बाग वञी सघो था।

(iii) मूं खे हिकु भाड एं हिक भेण आहे।

(iv) असीं तइलीमी वज़रात जी कोठ ते आया आहियूं।

(v) मूं खे तर्जुमान जी ज़रूरत आहे।

(vi) महिरबानी करे आहिस्ते-आहिस्ते चओ।

(vii) मूं इहा ब॒ोली हाणे सिखण शुरू कई आहे।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 5×1=5

(i) मैं थोड़ी-थोड़ी सिंधी बोलती हूँ।

(ii) यदि मैं कोई गलती करूँ तो मुझे बता देना।

(iii) आप किस विषय की पढ़ाई कर रहे हैं ?

(iv) सिंधी विभाग में 300 छात्र हैं।

(v) मेरा भाई मुझसे पाँच साल बड़ा है।

(vi) क्या आप विवाहित हैं ?

(vii) यहाँ सबसे नजदीक डाकघर कहाँ है ?

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी अनुवाद कीजिए : 1×15=15

(i) सिंधी हिन्दू पाण खे दरयाह पंथी चवाईंदा आहिनि ऐं सावण जे मुंद में बहराणा खणी खुशियूं मनाईंदा आहिनि। दरयाह पूजा आहे वरुण पूजा, जा प्राचीन आर्य नस्ल खां फसुल खे रेज दियण लाइ कंदा हुआ। वरुण जा पूजारी पंजाब में बि आहिनि। इहा पूजा प्राचीन वैदिक समे खां हलंदड़ आहे। प्राचीन आर्यनि जे अनेक देवताउनि में वरुण खे वदो मर्तबो हासिल थियलु हो, छाकाणि त हू रीति नीति सच ऐं सदाचार जो स्वामी लेखिबो हो। विद्वाननि जो

रायो आहे त आर्य लोकनि जा देवताऊं आचार बंहिंवार में रवाजी माण्हुनि जहिड़ा हुआ ऐं माण्हुनि जा जे चित्र चिटिया अथनि से देवता सरूपु। अक्सर देवताउनि जो अख़्लाकु त आम माण्हुनि जे भेट में घणो कसो हो। इन बारे में पुराणनि अंदरि वदो विस्तार दिनलु आहे। पर वरुण देवता लाइ इएं कीन चइबो। हू धर्म रक्षकु, सत्यवान, मर्यादा पुरुषोत्तम, हितकारी, दुख भंजन लेखियो वेंदो हो। जलदाता हुअण सबबि हू अन्नदाता पुणि हो। अल्बत, समे पुजाणा उन्हनि घणनि गुणनि धारण वारे कल्पना ते विष्णु नालो रखियाऊं ऐं वरुण शब्दु ख़ारिज थींदो वियो। सिन्धी में असी जेको उदेरो लफ़्जु कमि था आणिंयू, सो पुणि वरुण देवता जो बियो नालो आहे। इहो लफ़्जु पुराणी संस्कृत उडेर शब्द मां निकितो आहे, जंहिंजी मानाई आहे पाणी। झूनी झूनी स्कैंडेनियुनि में पुणि

आडेर माना आहे पाणी। इहो नालो पोलंड मां हिक वहंदड़ नदी "<u>ओडर</u>" जो पुणि आहे। पर इहो को पंथु नाहे। खेती अ गुज़रान कंदड़ हारी नारी, वाणिया बकाल दरयाह में सैलाब अचण ते झुमिरियूं पाइणु ऐं खुशियूं मनाइणु सो सुभावीक आहे; नकी वरी इनमें को हिन्दू मोमिन जो संधो आहे।

(ii) ईअं त लोक लफ्ज़ तमाम घणो आ<u>गा</u>टो ऐं कदीम आहे। अंग्रेजीअ में लोक अदब लाइ लफ्ज़ फोक लोर विलियम जॉन थॉमसन 1947 ई. में कतब आंदो। सोनिया<u>ब</u>रन 'हैंड बुक ऑफ फोक-लोर' में चयो आहे त–"लोक अदब उहो कदीम इन्सान जो दिली इजहारु आहे। उहा भली छो न दर्शन, धर्म, ज्ञान, विज्ञान, वैदक खेत्रनि में थियो हुजे, पर ज<u>ड</u>हिं अञां इतिहास, पुराणनि ऐं इन्सानी समाज जे जुदा जुदा क़बीलनि ऐं धर्म ग्रंथनि जी शुरुआत न थी हुई,

उन्हे अञां रचिया बि न विया हुआ तडहिं ही पिणि लोक हुआ ऐं अजु पिणि आहिनि।

डॉक्टर नारायण भारतीअ जो चवण आहे त–'लोक लफ्ज़ चवण सां या उन जी माना खे ख्याल में आणण सां असां जो आडा साधारण जन समाज जो ई तस्वीर या नक्शु थो अचे, जंहिं में रोइ ज़मीन जे फ़हिलयल जुदा जुदा किस्मनि जा मनुष्य अची वञनि था। 'लोक' गैर तबक़ेवार लफ्जु आहे। भारतीय समाज में शहरवासी, गोठाणा या देहाती उन्हनि खे हिकड़ा ब तबका लेखियो वञे थो, पर 'लोक' लफ्ज़ बिन्ही तबकनि सां लगे थो। लोक असांजी जिन्दगीअ जो महासागर आहे उन में माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल सभु कुझु समायल आहे। 'लोक' राष्ट्र जो बकाई रूप आहे उन जो भलो, असांजी तरकीअ जो दरवाजो आहे ऐं निर्माण जो नओं रूप आहे।

8. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 1×15=15

(i) जब 1942 में महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन चलाया तो हेमूं भी अपने साथियों के साथ उसमें हिस्सा लेने लगे। उसी समय 23 अक्टूबर, 1942 को उस टोली को गुप्त सूचना मिली कि अंग्रेजी सेना की हथियारों से लैस एक ट्रेन रोहड़ी शहर से पार होकर ही गंतव्य की ओर प्रस्थान करेगी। ये हथियार सिंध में कार्यरत स्वतंत्रता सेनानियों को मारने के लिए प्रयोग में लाए जाने थे। हेमूं व उसके नौजवानों की टोली तो इसी ताक में रहती थी कि कैसे ब्रिटिश सेना को नुकसान पहुँचाएँ व देश के क्रांतिकारियों को सुरक्षा प्रदान की जाए ? हेमूं कालानी ने अपनी बहादुर टोली के साथ रेल की पटरियों को ही उखाड़ फेंकने की योजना बना डाली। यह काम अल्प समय में इतनी

कारीगरी से इतने गुप्त तरीके से किया गया कि किसी को भनक भी न लगी। जब काम खत्म करके जा ही रहे थे कि न जाने कैसे वहाँ तैनात पुलिसकर्मियों की नजर उनपर पड़ गई और उन्होंने किशार हेमूं को सलाखों के पीछे डाल दिया जबकि शेष साथी भागने में सफल रहे। इन्हीं साथियों का नाम न बताकर हेमूं ने अपने देश के नाम को ऊँचा किया। जेल में साथियों, महिलाओं, बुजुर्गों की टोलियाँ हेमूं को समझाने जाती थीं कि साथियों के नाम बताओ तो फाँसी से मुक्ति मिलेगी, पर वह उस खूँखार सरकार को जानते थे कि ''मुझे छोड़ेंगे या नहीं, पर बचे साथियों को कष्ट देकर फाँसी जरूर देंगे। फिर देश के लिए काम करने वालों की भी कमी होती चली जाएगी।'' इतनी–सी उम्र में इतनी दार्शनिक सोच, उनके जज्बे को सलाम है।

(ii) भारत एक तेजी से उभरने वाली अर्थव्यवस्था हैं, जिसमें 100 करोड़ से भी ज्यादा लोग शामिल हैं और जिन्हें ऊर्जा की बड़ी मात्रा में आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति भारत सरकार द्वारा विभिन्न नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधनों का उपयोग करके की जा रही है। हमारा देश बिजली को उत्पन्न करने एवं उसकी खपत करने में विश्व में पाँचवें स्थान पर है। हमारे देश में बिजली का उत्पादन हर साल बढ़ रहा है, पर हम इस बात से भी इंकार नहीं कर सकते कि देश में जनसंख्या भी बढ़ रही है।

देश में बिजली का 53% उत्पादन कोयले से किया जाता है और ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वर्ष 2040–2050 तक ये भी समाप्त हो जाएगा। भारत की 72% से अधिक जनता गाँवों में निवास करती है और इसमें से आधे गाँव बिना बिजली के ही अपना जीवनयापन कर रहे

हैं। अब भारत ऐसी स्थिति में आ गया है कि अब हम ऊर्जा के अधिकाधिक उत्पादन के लिए, ऊर्जा के संरक्षण के क्षेत्र में, उसके नवीकरण एवं बचाव के लिए कदम उठाएँ। इस माँग को पूरा करने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग सर्वोत्तम उपाय है, जिससे ऊर्जा की माँग एवं पूर्ति के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

× × × × × × ×